इकाई–8

परीक्षा में अधिभार

क्र.	पाठ्यक्रमानुसार इकाई एवं विषय वस्तु	इकाई पर आवंटित कुल अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			1अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	
01	निबन्ध लेखन किसी एक विषय पर, किसी एक शीर्षक पर अनुच्छेद लेखन/संवाद लेखन	07		–	01	01	02

महत्वपूर्ण बिन्दु

- निर्धारित इकाई से 3 अंक का 1 प्रश्न तथा 4 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा।

इकाई–8

प्र.1. निम्नलिखित विषयों पर निबन्ध लिखिए :–

1. पर्यावरण का महत्व
2. कम्प्यूटर की हमारे जीवन में उपयोगिता
3. विज्ञान के चमत्कार
4. हमारे राष्ट्रीय पर्व
5. स्त्री शिक्षा का महत्व
6. इन्टरनेट से लाभ व हानि
7. विद्यार्थी जीवन

प्र.2. (अ) निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए– (3 अंकीय प्रश्न)

1. आपके विद्यालय में मनाए जाने वाले सांस्कृतिक समारोह पर एक अनुच्छेद लिखिए।
2. लेखिका मन्नूभंडारी के साहसिक व्यक्तित्व पर एक अनुंच्छेद लिखिए।
3. द्विवेजी जी की भाषा–शैली पर अनुच्छेद लिखिए।
4. अपने मनपसंद कहानीकार के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।

(ब) निम्नलिखित विषयों पर संवाद लिखिए–

1. दो मित्रों के बीच परीक्षा की तैयारी पर संवाद लिखिए।
2. श्रीराम के द्वारा धनुष के तोडे जाने पर परशुराम कोधित होते है। लक्ष्मण भी उनसे बातचीत करते है, परशुराम व लक्ष्मण के बीच हुई (बातचीत)संवाद को लिखिए।
3. सूरदास के पद में गोपियों व उद्धव के मध्य हुई बातचीत/संवाद को लिखिए।
4. पुराने समय में स्त्री शिक्षा संबंधी बातों को अपनी दादी/नानी या माँ से हुई बातचीत

Scanned with CamScanner

17. वृक्षारोपण या वन संरक्षण
या, वन महोत्सव और प्रदूषण की समस्या
या, वन रहेंगे तो हम रहेंगे

वृक्ष का अर्थ है पानी।
पानी से रोटी मिलती है, जो जीवन देती है। **—के. एम. मुन्शी**

प्रस्तावना—वनों या वृक्षों का भारतीय संस्कृति में बड़ा महत्व रहा है। हमारे यहाँ लोग प्राचीन काल से लेकर आज तक वृक्षों की पूजा करते आ रहे हैं। अश्वत्थ (पीपल) का वृक्ष तो वासुदेव भगवान का प्रतीक माना जाता है। लाभालाभ दृष्टिकोण से भी वन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। किसी भी देश के आर्थिक विकास में वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वन कृषि, उद्योग, यातायात में सहायक तो हैं ही इनसे अन्य महत्वपूर्ण लाभ भी हैं। वनों से लाभ दो प्रकार से प्राप्त होते हैं—प्रत्यक्ष लाभ और अप्रत्यक्ष लाभ ।

प्रत्यक्ष लाभ—(1) वनों से अनेक उद्योगों को आश्रय मिलता है, जैसे—सवाई घास और बाँस से कागज बनाया जाता है। वनों से रबर,शहद, गोंद, चंदन आदि प्राप्त किया जाता है। (2) वनों से बहु-कीमती लकड़ियाँ प्राप्त की जाती हैं जिनसे जहाज, रेल के डिब्बे, दरवाजे, खिड़कियाँ आदि अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनायी जाती हैं। (3) पशुओं के लिए उत्तम चारागाह प्राप्त होते हैं। (4) वन क्षेत्रों में प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र होते हैं। (5) वन वन्य प्राणियों के आवास व सुरक्षा स्थल हैं। (6) वनों के कंद-मूल, फूल और फलों से अनेक औषधियों का निर्माण होता है। (7) वनों से खाद प्राप्त होता है। (8) वनों से सरकार को आय होती है, भारत को वनों से करोड़ों का लाभ होता है।

अप्रत्यक्ष लाभ—(1) वन वर्षा कराने में सहायक होती है। (2) वनों से रेगिस्तान बनने की संभावना नहीं रहती। (3) वन बाढ़ पर, तापक्रम पर नियंत्रण रखते हैं। (4) ये नदी के निरंतर बहाव को संभव बनाते हैं। (5) वन क्षेत्रों में पानी का जलस्तर ऊँचा रहता है। (6) वन प्रदूषण को रोकते और पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

Scanned with CamScanner

निर्दय कटाई से उत्पन्न भयावह समस्याएँ—मानव ने अपने व्यक्तिगत क्षणिक लाभ के कारण पेड़ों पर जो अंधा-धुंध कुल्हाड़ी चलाई है, उसके भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं। जहाँ-जहाँ जंगल कटे हैं, वहाँ-वहाँ भूमि क्षरण के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो गयी है। खारों का निर्माण हुआ है। वन क्षेत्र के कम होने से वर्षा पर भी प्रभाव पड़ा है, परिणामस्वरूप उपजाऊ इलाके रेगिस्तानी भूमि में बदल रहे हैं। इस प्रकार जैसे-जैसे वन क्षेत्र कम हो रहे हैं वैसे-वैसे प्रदूषण, भूमिक्षरण, कम या अवर्षा, बाढ़ आदि की भयंकर समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

वृक्षारोपण या वन महोत्सव—वन के महत्व को ध्यान में रखकर ही सन् 1950 से देश में वन महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। संजय गांधी ने पाँच सूत्रीय कार्यक्रम और इंदिरा गांधी ने बीस सूत्रीय कार्यक्रम में वृक्षारोपण को एक विशिष्ट कार्यक्रम घोषित किया। तब से आज तक इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता मिल रही है। हमारी सरकार इस सम्बन्ध में सजग है व त्वरित कदम उठा रही है।

उपसंहार—हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम वृक्षारोपण को एक धार्मिक या राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनायें। हर भारतीय के मन में यह भावना जाग्रत होनी चाहिए कि निष्प्रयोजन वृक्ष की डालियों तक को न काटें। वृक्ष लगायें, लगवायें और लगाने के लिए प्रोत्साहित करें। वृक्षों की महत्ता के संबंध में पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था—"उगता हुआ वृक्ष उभरते हुए राष्ट्र का प्रतीक होता है।"

Scanned with CamScanner

7. विद्यार्थी और अनुशासन

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन जीवन में व्यवस्था लाता है। जीवन को व्यवस्थित बनाने के लिए परम्परागत नियमों एवं नीतियों का अनुसरण आवश्यक है। आत्मानुशासन, अनुशासन का ही एक रूप है। यह चरित्र का निर्माण करता है।

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन—विद्यार्थी जीवन भावी जीवन की आधारशिला है। इस काल में बालक जो कुछ सीखता है और ग्रहण करता है, उससे उसके भावी जीवन का निर्माण होता है। यह काल एक तरह से बीज बोने का काल है। अत: विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की उपयोगिता निर्विवाद है। विद्याध्ययन करते हुए विद्यार्थी में जो संस्कार डाल दिये जाते हैं, जीवनपर्यन्त रहते हैं। अनुशासनहीन विद्यार्थी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता।

प्राचीन काल का विद्यार्थी जीवन— प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरुकुल में रहते हुए त्याग, सेवा, विनय, सहानुभूति आदि गुणों को ग्रहण कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता था। गुरुकुल में ही उसके जीवन की सुदृढ़ आधारशिला रख दी जाती थी। संयम, नियम, कर्मठता आदि गुणों की थाती उसे प्राप्त होती थी।

आज का विद्यार्थी जीवन—आज पाँच या छ: वर्ष की अवस्था में बालक विद्यार्थी जीवन में प्रवेश करता है। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर वह महाविद्यालय में प्रवेश करता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर तक तो वह अनुशासित दिखायी देता है, किन्तु महाविद्यालयीन हवा लगते ही वह अनुशासनहीनता की ओर अग्रसर दिखाई देता है यह अनुशासनहीनता उसे कहाँ ले जायेगी कुछ कहा नहीं जा सकता।

अनुशासनहीनता की समस्या—अनुशासनहीनता कॉलेज के विद्यार्थियों में ही हो ऐसी बात नहीं है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। अनुशासनहीनता की समस्या शासन के सामने प्रश्नवाचक चिह्न बनी हुई है। विद्यार्थी ही राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं, भविष्य की आशाएँ हैं, राष्ट्र की नैया को खेने वाले नाविक हैं और वे ही दिशाहीन होते जा रहे हैं।

अनुशासनहीनता की इस राष्ट्रव्यापी समस्या का मूल कारण क्या है ? विद्यार्थी इतने उच्छृंखल, गैर जिम्मेदार, अनुशासनहीन और अभद्र क्यों होते जा रहे हैं ?

सर्वप्रथम कारण है, माता-पिता का अनुत्तरदायी दृष्टिकोण। बच्चों को स्वतंत्र छोड़ देने से वे दिशाहीन हो जाते हैं। दूसरा कारण है शिक्षा का जीवनोपयोगी न होना। विद्यार्थी का आज शिक्षा पर कोई विश्वास नहीं रह गया। विद्यार्थी और शिक्षक के बीच अलगाव सा आ गया है। शिक्षक छात्रों के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर रहे हैं और न ही विद्यार्थी उनके प्रति आदर या श्रद्धा व्यक्त करते हैं। विद्यार्थी गुरुओं के प्रति असम्मान, परीक्षा प्रणाली के प्रति असंतोष, राजनैतिक हथकंडों की गिरफ्त जैसी अनियमितताओं का शिकार बना हुआ है।

विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी का ऐसा पिंड है जिसे चाहे जैसा रूप दिया जा सकता है। चरित्र-निर्माण का यही श्रेष्ठ अवसर है। इस अवस्था में विद्यार्थी आत्मनिर्भरता, उदारता, स्नेह,सौहार्द्र, श्रद्धा, आस्था, नम्रता आदि गुणों का विकास कर सकता है।

Scanned with CamScanner

समस्याओं का समाधान—अनुशासनहीनता की कथित समस्या का समाधान एक ही प्रकार से हो सकता है कि उन्हें जीवन की जिम्मेदारियों का अनुभव कराया जाये। अनुशासनहीनता से होने वाली हानियों एवं राष्ट्रीय क्षति से उन्हें परिचित कराया जाये और स्वार्थ की राजनीति से उन्हें दूर रखा जाये। अनुशासन अध्ययन एवं आदर्श नागरिकता के गुणों का इनमें विकास किया जाये। उनकी समस्याओं के निराकरण एवं समुचित विकास की ओर पूरा ध्यान दिया जाये तो कोई कारण नहीं कि विद्यार्थियों में असंतोष भड़के। आज का विद्यार्थी देश की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं से अप्रभावित नहीं रह सकता। घासलेट के लिये घंटों लाइन में खड़े रहने के बाद उससे स्वस्थ मानसिकता की आशा नहीं की जा सकती। अतः आवश्यक है कि छात्रों के सर्वांगीण विकास एवं समस्याओं को सदैव दृष्टि पथ में रखा जाये।

उपसंहार—अनुशासन की समस्या आज विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है। सारे देश को अनुशासन की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार और महँगाई की समस्याएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त अनुशासनहीनता के कारण हैं। विद्यार्थियों को बदलती हुई परिस्थितियों से परिचित कराते हुए उनमें चरित्र-निर्माण के लिए उदारता, त्याग, सेवा, विनय आदि गुणों से विभूषित किया जाये तो अनुशासनहीनता की समस्या का स्वयमेव समाधान हो जायेगा।

Scanned with CamScanner

कम्प्यूटर : महत्व एवं उपयोगिता - निबंध

August 28, 2019

"कम्प्यूटर : महत्व एवं उपयोगिता" नामक निबंध के निबंध लेखन (Nibandh Lekhan) से अन्य सम्बन्धित शीर्षक, अर्थात "कम्प्यूटर : महत्व एवं उपयोगिता" से मिलता जुलता हुआ कोई शीर्षक आपकी परीक्षा में पूछा जाता है तो इसी प्रकार से निबंध लिखा जाएगा।

'कम्प्यूटर : महत्व एवं उपयोगिता' से मिलते जुलते शीर्षक इस प्रकार हैं-

- कम्प्यूटर की उपयोगिता
- कम्प्यूटर : यन्त्र मानव
- कम्प्यूटर : दुनिया का भविष्य
- भारत में कम्प्यूटर का प्रयोग
- कम्प्यूटर और जीवन
- कम्प्यूटर : आधुनिक यन्त्र पुरुष
- कम्प्यूटर के उपयोग
- कम्प्यूटर और इन्टरनेट

निबंध की रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. कम्प्यूटर का अर्थ
3. कम्प्यूटर के उपयोग
4. कम्प्यटर और इन्टरनेट

Scanned with CamScanner

5. कम्प्यूटरों से लाभ
6. उपसंहार

कम्प्यूटर : महत्व एवं उपयोगिता

प्रस्तावना

वर्तमान युग को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। आने वाले कुछ वर्षों में कंप्यूटर प्रत्येक घर में टी.वी. की तरह दिखाई देगा क्योंकि किसी का भी काम कम्प्यूटर के बिना चलने वाला नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर की घुसपैठ हो गई है।

व्यवसाय, नौकरी, उद्योग, व्यापार, बीमा, बैंक रेल, हवाई यातायात, चिकित्सा, इन्जीनियरिंग शिक्षा, प्रबन्धन, सूचना तकनीक सर्वत्र कम्प्यूटर का बोलबाला है। सच तो यह है कि कम्प्यूटर अब आम जरूरत की चीज बन गई है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया कम्प्यूटरों के उपयोग से जुड़ी हुई है। कम्प्यूटर के आविष्कार ने वैज्ञानिक प्रगति को एक नई दिशा दी है। विविध क्षेत्रों में विज्ञान एवं तकनीक ने जो आशातीत उन्नति की है उसका पूरा श्रेय कम्प्यूटर को है।

देखें - विज्ञान : अभिशाप या वरदान पर निबंध

कम्प्यूटर का अर्थ

मोटे तौर पर कम्प्यूटर को वैज्ञानिक ढंग से विकसित यान्त्रिक बुद्धि कहा जा सकता है। मानव शरीर में मस्तिष्क जो कार्य निष्पादित करता है, वही कार्य कम्प्यूटर का है। यही नहीं अपितु मस्तिष्क को काम करने में जितना समय लगता है, कम्प्यूटर उससे कम समय में बिना कोई गलती किए हुए वही कार्य सम्पन्न कर देता है।

6 या 7 अंकों वाली संख्याओं के जोड़, बाकी, गुणा, भाग, वर्गमूल, आदि करने में कैलकुलेटर' एक सेकण्ड का भी समय नहीं लेता जबकि मस्तिष्क इसे हल करने में कई मिनट का समय लेगा।

Scanned with CamScanner

'चार्ल्स बेवेज' ने 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सर्वप्रथम पहला कम्प्यूटर निर्मित किया जो लम्बी-लम्बी गणनाएं करके उनके परिणामों को मुद्रित भी कर सकता था।

कम्प्यूटर के उपयोग

आज कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है। बैंकिंग क्षेत्र में यह हिसाब-किताब रखने का काम करता है। सूचना एवं समाचार प्रेषण के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर प्रयोग से एक क्रान्ति-सी आ गई है। दूरसंचार की दृष्टि से भी वे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे है। विज्ञान एवं तकनीक के अनुसन्धान क्षेत्र में, परमाणु ऊर्जा, अन्तरिक्ष विज्ञान जैसे क्षेत्रों में कम्प्यूटरों ने उपयोग में नई जानकारियां प्रदान की हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में भी कम्प्यूटरों का प्रयोग विविध रूपों में होने लगा है। कम्प्यूटर का अति विकसित रूप यन्त्र मानव या 'रोबोट' है जो ऐसे स्थानों पर काम करने में सक्षम है जहां मानव के जीवन को खतरा है। रेल की आरक्षण खिड़कियों पर अब कम्प्यूटर लग गए हैं। मौसम विज्ञान की भविष्यवाणियों में भी इनसे सहायता ली जा रही है। युद्ध एवं शान्ति दोनों में ही कम्प्यूटरों की विशेष भूमिका है।

कम्प्यूटरों का उपयोग वर्तमान भारत की मूलभूत आवश्यकता है। कुछ लोग भले ही इस आधार पर कम्प्यूटर का विरोध करें कि इस प्रक्रिया से देश में बेरोजगारी बढ़ेगी, किन्तु यह सच नहीं है। विकसित विश्व के साथ यदि हमें कदम-से-कदम मिलाकर चलना है तो कम्प्यूटरों को घर-घर तक पहुंचाना होगा।

कम्प्यूटर और इन्टरनेट

कम्प्यूटर के नेटवर्क को 'इन्टरनेट' कहा जाता है। इन्टरनेट से जुड़े कम्प्यूटर को अपनी आवश्यकता के अनुरूप दूसरे कम्प्यूटर से सूचना ले सकने की सुविधा प्राप्त होती है। इस प्रकार सभी देशों के लोग इन्टरनेट सुविधा के द्वारा पारस्परिक सूचनाओं एवं आंकड़ों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

इन्टरनेट के द्वारा E-mail भी प्राप्त की जा सकती है तथा अलग-अलग स्थानों पर बैठे लोग आपस में 'वीडियो कॉन्फ्रेन्स' भी कर सकते हैं। इन्टरनेट ने दुनिया को एक परिवार बना दिया है। विश्व के किसी भी हिस्से में होने वाली गतिविधि को अब इन्टरनेट के जरिए कहीं भी पहुंचाया जा सकता है। इन्टरनेट पर समाचार-पत्र भी उपलब्ध हैं तथा सूचनाओं का अथाह भण्डार विभिन्न वेबसाइटों पर प्राप्त है।

कम्प्यूटरों से लाभ

'कम्प्यूटरों' के उपयोग ने मानव जाति को विविध क्षेत्रों में अनेक लाभ पहुंचाए हैं। इन्टरनेट के द्वारा जहां हम पूरे विश्व से जुड़ गए हैं वहीं घर बैठे-बैठे कोई भी सूचना प्राप्त कर सकते हैं और सुदूर देशों में रहने वाले अपने मित्रों, सगे-सम्बन्धियों से बातचीत कर सकते हैं, उन्हें सन्देश भेज सकते हैं, ई-मेल कर सकते हैं। यह कम मूल्य पर उपलब्ध होने वाली ऐसी सेवा है जिसका अब भरपूर उपयोग किया जा रहा है।

कम्प्यूटर के विकास ने सूचना प्रौद्योगिकी को नए आयाम दिए हैं। संचार उपग्रह बिना कम्प्यूटर के काम नहीं कर सकते। मोबाइल फोन, सेटेलाइट फोन जैसी सुविधाएं इन्हीं संचार उपग्रहों से ही सम्भव हो सकी हैं।

Scanned with CamScanner

कम्प्यूटर का प्राण तत्व है- माइक्रोचिप्स पर अंकित सूचनाएं। यह इसका 'सॉफ्टवेयर' है। हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि आज भारत कम्प्यूटरों के 'सॉफ्टवेयर' निर्माण में विश्व के अग्रणी देशों में से एक है। भारत इस क्षेत्र में निर्यात करके भारी विदेशी मुद्रा कमा रहा है।

कम्प्यूटर शिक्षा आज का फलता-फूलता व्यवसाय है। भारत में प्रति वर्ष लाखों की संख्या में कम्प्यूटर प्रोग्रामर एवं इस विषय के जानकार लोग प्रशिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जिनकी विदेशों में भारी मांग है। कम्प्यूटर व्यवसाय ने लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं।

उपसंहार

कम्प्यूटर का निर्माण भी मानव मस्तिष्क ने ही किया है अतः यह व्यवहार में भले ही बुद्धि को पराजित कर दे, पर अन्ततः मानव बुद्धि का लोहा तो उसे मानना ही पड़ेगा। कम्प्यूटर और चाहे जो कुछ भी कर ले पर मानवीय अनुभूतियों, संवेदनाओं, विवेक, चिन्तन का स्रोत नहीं बन सकता।

यही मनुष्य की विशेषता है जो उसे यन्त्र से अलग करती है। कुछ भी हो, हमें कम्प्यूटरों के प्रयोग से आशंकित नहीं होना चाहिए अपितु इसका आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए तभी हम इक्कीसवीं सदी में मजबूती से अपने पैर जमा सकेंगे।

Scanned with CamScanner